ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 328-332
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

महिला शिक्षा और आर्य समाज

1. अमृता सिंह
2. प्रो0 सुगम आनन्द

Received-22.12.2022, Revised-25.12.2022, Accepted-29.12.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***सामाजिक–धार्मिक पुनर्जागरण का प्रभाव भारतीय समाज पर सकारात्मक रूप से पड़ा और विभिन्न सामाजिक सुधारों पर बल दिया गया। महिला शिक्षा का प्रश्न इन्हीं में से एक था। 19वीं शताब्दी में महिला शिक्षा पर समाज सुधारकों के साथ–साथ ब्रिटिश सरकार ने भी प्रयास किये । सामाजिक सुधारकों में एक प्रमुख योगदान दयानंद सरस्वती का भी हैं, जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर इसके मूल 10 सिद्धान्तों में महिला शिक्षा पर भी बल दिया। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने संस्थागत प्रयास किये और कन्या पाठशाला, कन्या महाविद्यालय व कन्या गुरुकुल की स्थापना की। महर्षि दयानंद स्त्रियों को वेदों की शिक्षा देने के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि वैदिक काल में महिला को शिक्षा का अधिकार था। स्त्री शिक्षा पर बल देने का कारण यह भी था कि आर्य समाज की विश्व दृष्टि संसार का उपकार करने की थी। आर्य समाज द्वारा महिला शिक्षा के साथ–साथ समाज में फैले अन्य सामाजिक बुराइयों को भी समाप्त करने पर बल दिया गया। इसने अपने मूल सिद्धान्तों में बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा आदि का विरोध किया।***

आर्य समाज द्वारा देहरादून, नरेला, जालंधर में अनेक शैक्षणिक संस्थायें खोली गयी। भारत में अनेक स्थान पर कन्या पाठशालायें, डी0ए0वी0 कन्या महाविद्यालय तथा डी0ए0वी0 गर्ल्स स्कूलों की श्रृंखला बनाई गई। गुरुकुलों का उद्देश्य कन्याओं को प्राचीन भारतीय वैदिक वातावरण में रखकर भारतीय संस्कृति के अनुरूप सीधा साधा जीवन बिताते हुये संस्कृत, व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी, वेद, दर्शन, उपनिषद्, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, गृह विज्ञान, भारतीय संस्कृति, संगीत, व्यायाम, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर आदि की शिक्षा देकर योग्य नागरिक बनाना है।

कुंजीभूत शब्द– पुनर्जागरण, सत्यार्थ प्रकाश, वेदाधिकार, कन्या गुरूकुल, सती प्रथा, विधवा–विवाह, आर्ष–पाठविधि।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती के महिला शिक्षा पर विचारों को प्रस्तुत करना।
2. आर्य समाज द्वारा महिला शिक्षा के लिए प्रदत्त शिक्षा पद्धति की प्रकृति का अध्ययन करना।
3. आर्य समाज द्वारा स्थापित गुरूकुल तथा कन्या विद्यालयों का परिचय।
4. आर्य समाज के स्त्री शिक्षा के प्रयासों का विश्लेशण।

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय समाज सुधारकों द्वारा महिला शिक्षा के क्षेत्र में सिद्धान्त और व्यवहार, दोनों दृष्टि से प्रयास किये गये। इसके प्रणेताओं में राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन आदि प्रमुख थे।[1] इनके प्रयासों का ही परिणाम था कि ब्रिटिश सरकार ने महिला शिक्षा के क्षेत्र पर ध्यान दिया। 1854 का वुड्स डिस्पैच, 1882 की 'हन्टर कमेटी' रिपोर्ट आदि में महिला शिक्षा का समर्थन किया गया।[2] महिला शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक अथवा संगठनिक प्रयास आर्य समाज द्वारा भी किये गये, जिसकी स्थापना 1875 ई0 में दयानन्द सरस्वती ने की थी। उनकी रचना सत्यार्थ प्रकाश में महिला शिक्षा के विषय में उनके विचार स्पष्ट परिलक्षित होते है।[3]

महर्षि दयानंद सरस्वती के सामाजिक, धार्मिक कार्य–क्षेत्र में अवर्तीण होने के समय तक भारत में यह सिद्धान्त सर्वमान्य था कि स्त्रियाँ शिक्षा पाने का अधिकार नहीं रखती हैं। उन्हें न केवल वेदों तथा संस्कृत भाषा की अपितु लोकभाषा की भी कोई शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। यहाँ तक कि हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के वेद–विभाग में इस शताब्दी के मध्य तक कन्याओं को वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त नहीं था। इसके लिए ''मीमांसा न्याय प्रकाश'' के उद्धरण को आधार बनाया गया और कन्याओं के वेदाध्ययन के निषेध को श्रुति–सम्मत ठहराया गया था।[4] इसका स्पष्ट आशय था कि स्त्री तथा शूद्र को वेद नहीं पढ़ाना चाहिए– 'स्त्री, शूद्रो नाधीयोतम्'। धर्म के विषय में स्वामी दयानन्द ने स्त्री–पुरूष को समान अधिकार दिये जिसमें धर्म–ग्रन्थों का पठन–पाठन, धार्मिक क्रियाओं का संपादन, यज्ञ और गायत्री मंत्र का जाप आदि शामिल है। इसीलियें आर्य समाज प्रशिक्षणोपरांत स्त्री को पुरोहित का कार्य करने का भी अधिकार देता है। महर्षि दयानन्द ने स्त्री–पुरूषों को समान रूप से धार्मिक अधिकार की वकालत की।[5]

महर्षि दयानंद स्त्रियों को वेद की शिक्षा देने के प्रबल समर्थक थे। स्वामी दयानन्द मानते थे कि स्त्री व पुरूष जीवन–रथ के दो पहियों के समान हैं। अतः दोनों का ज्ञानवान होना और अध्यात्मिक दृष्टि से जागृत होना आवश्यक है। अशिक्षित नारी जागरूक नहीं हो सकती। शिक्षा से ही अस्तित्व का महत्व समझ में आता है। स्वामी जी ने यजुर्वेद से प्रमाण

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

प्रस्तुत किया –

'यथेमां वाचं कलयाणीमावदानि जनेयः।
ब्रह्म राजन्यायां शूद्राय, चार्याय ल स्वाथ चारणायच।।[6]

अर्थात् परमात्मा ने वेदों का प्रकाश सभी मानवों के लिये किया है।

सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में वे कहते हैं कि "यह राजनियम और जाति नियम होना चाहिये कि पाँचवे अथवा आठवे वर्ष से आगे कोई अपने पुत्र–पुत्रियों को घर में न रखे, पाठशाला में भेजे। यदि न भेजे तो दण्ड का भागी हो।"[7]

वे लिखते हैं, "जैसे पुरूषों को न्यूनतम व्याकरण, धर्म और व्यवहार की विधा अवश्य पढ़ना चाहिये वैसे ही स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित व शिल्प विद्या अवश्य पढ़नी चाहिए।"[8] इससे स्पष्ट है कि स्त्रियों को कम से कम घर के आय–व्यय का हिसाब रखने के लिये गणित, सन्तान को सम्यक् आचरण सिखाने के लिये धर्म, स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन व प्रारंभिक चिकित्सा के लिये वैद्यक, गृह–निर्माण व वस्त्राभूषण की आवश्यकता हेतु शिल्प का ज्ञान अवश्य करना चाहिये।

स्त्रियों को वेदाधिकार से वंचित करने वाले वचनों को कपोल कल्पित मानते थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुये लिखा कि "सब स्त्री और पुरूष अर्थात् मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है।' 'स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम' तुम्हारी कपोल कल्पना से हुई है। किसी प्रमाणिक ग्रन्थ की नहीं है।"[9] स्त्री शिक्षा पर बल देने का कारण यह भी था कि आर्य समाज की विश्व–दृष्टि यह थी कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का उद्देश्य है, इसीलिये शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना आर्य समाज के छठे नियम में आता है।[10]

महर्षि दयानंद सरस्वती ने संसार के उपकार और मानव समाज के हित, कल्याण एवं सुख समृद्धि के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की थी और यह भी निर्दिष्ट कर दिया था कि इस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए "अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।"[11] परिणाम यह हुआ कि शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों और लड़कियों के आर्य स्कूल, कॉलेज, कन्या महाविद्यालय, आर्य कन्या गुरूकुल, आर्य पुत्री पाठशालाओं का आर्य समाज के जाल सा बिछा दिया।

इस युग में महर्षि दयानंद ने स्त्रियों की स्थिति को वैदिक आदर्श के अनुकूल उन्नत बनाने का सबसे अधिक प्रयत्न किया। उन्होंने "ब्रह्म चर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्", जैसे मन्त्रों को उद्घृत करते हुये कन्याओं के लिए ब्रह्मचर्य का विधान किया। जिस प्रकार वैश्य लोग धर्म धारण करके धनोपार्जन करते हैं, उसी प्रकार कन्याओं को चाहिए कि विवाह से पहले शुरू ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके विदुषी अध्यापिकाओं को प्राप्त करके सुशिक्षा और विद्या सञ्चय करके विवाह करे।[12]

उन्नीसवीं सदी में भारतवर्ष का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पतन का प्रमाण महिलाओं की अधोगति, अशिक्षा, उनके प्रति रूढ़िवादिता तथा सती प्रथा, बाल–विवाह आदि कुप्रथाओं का चलन था। सती प्रथा के उन्मूलन के लिए राजा राममोहन राय के प्रयास फलीभूत हुए। उनके प्रयासों का प्रतिफल ब्रह्म समाज के रूप में था जिसने तत्कालीन समाज में हलचल मचा दी। अन्धविश्वास और अविद्या के गहन अंधकार में प्रकाश की एक किरण दिखाई दी।

भारत में 19वीं शताब्दी समाजों की शताब्दी रही। ब्रह्म समाज के पश्चात् अनेक संगठन बने जैसे – प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि, परन्तु सामाजिक अंधकार के मूल कारण अशिक्षा और अपने परिवेश के प्रति जागृति पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया गया। महर्षि दयानंद को श्रेय जाता है कि उन्होंने न केवल प्राचीन गौरव का स्मरण कराया, परन्तु स्त्री शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया।

इस कालखंड में भारतीय समाज कृषि, कुटीर उद्योगों और व्यापार पर आश्रित था। शिक्षा के अभाव में सामान्यजन रूढ़िग्रस्त और अंधविश्वासी हो गए थे। अंग्रेजों के शासक बन जाने के बाद भूमि निजी संपत्ति बन गई। नये जमींदारों का उदय हुआ और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विघटन। निर्धनता बढ़ी और परम्परागत उद्योग समाप्त प्रायः हो गए।[13]

अंग्रेजों को अंग्रेजी समझने वाली कर्मचारियों की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने इस हेतु विद्यालय खोले। अंग्रेजी के साथ अंग्रेजियत भी आई और सामाजिक परिवर्तन होने लगे। आर्य समाज ने व्यावसायिक शिक्षा को भी भारतीय सन्दर्भों में देने का प्रयास किया और दयानंद ऐंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना की। ऐसे पढ़े–लिखे वर्ग का उदय हुआ जो देश की प्राचीन गौरवशाली परंपराओं का वाहक बना। इस वर्ग ने ही राष्ट्रीय आन्दोलन को सुदृढ़ किया।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीयों में आत्मविश्वास जागृत किया और भारतीय संस्कृति की गरिमा और श्रेष्ठता का भान कराया। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज सामाजिक–धार्मिक और राष्ट्रीय नवजागरण का आन्दोलन था। इसने न केवल हिन्दू धर्म में व्याप्त कुप्रथाओं और रूढ़ियों का विरोध किया वरन् राष्ट्रीय चेतना का प्रसार भी किया। इसने वेद के ज्ञान के भण्डार को उजागर कर वैद्विक धर्म की श्रेष्ठता स्थापित की।[14]

स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा हिन्दी को मानने वाले पहले व्यक्ति थे। वे मानते थे भारतीयों

के अस्तित्व की रक्षा करने और विकास का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है। इसीलिये आर्य–समाज ने अपनी शिक्षा प्रणाली की जड़े राष्ट्रीय भावना और प्राचीन परम्परा में गहरी जमाई जिसमें नीति शास्त्र और दर्शन अनिवार्य माना गया।[15]

जिस देश में मातृदेवी भवः का नारा गुंजायमान था, उसी देश में लड़कियों को पढ़ाने का प्रावधान नहीं था, उनके पढ़ने का अधिकार छीन लिया गया था। माँ अगर लिखी–पढ़ी न होगी तो संतान का उत्कृष्ट लालन–पालन कैसे होगा? लड़की की 9–10 वर्ष की आयु में शादी कर दी जाती थी। यदि दुर्भाग्यवश पति की मृत्यु कम उम्र में हो जाती तो उस लड़की को विधवा करार दिया जाता था जिसका कोई सामाजिक अधिकार नहीं होता था। ऐसा समाज प्रगति कैसे करता ? स्वामी दयानंद ने समानता की बात की और कहा कि सभी लड़कियों को पढ़ने का अधिकार बराबर लड़कों जैसा होना चाहिए। बाल–विवाह का निषेध किया। विधवा–विवाह का आदेश दिया और अनमेल विवाह को रोका। पूरा तत्कालीन समाज उनके विरोध में था पर स्वामी जी के प्रयास से एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसने स्त्री शिक्षा के लिए बड़ी सस्थायें खड़ी कीं।[16]

आर्य समाज के इतिहास में स्त्री शिक्षण संस्थाओं का विकास महत्वपूर्ण स्थान रखता है। समाज ने कन्या पाठशाला के रूप में अनूठी और अनोखी संस्था स्थापित की। आर्य समाज में स्त्री शिक्षा के कार्य का श्रीगणेश हुआ और प्रबल बाधाओं के होते हुये भी इसे इतनी सफलता से सम्पन्न किया कि यह अपने समय की आदर्श अनुकरणीय संस्था बन गयी। इसके नमूने पर अनेक आर्य समाजों ने अपने यहाँ कन्या विद्यालय शुरू किये। 1923 में कन्या गुरूकुल, देहरादून की स्थापना के बाद उत्तर प्रदेश, गुजरात आदि विभिन्न प्रान्तों में कन्या गुरूकुलों की स्थापना हुई।

1956 में दिल्ली में नरेला कन्या गुरूकुल की स्थापना के साथ कन्या गुरूकुलों की आर्ष–पद्धति का विकास प्रारंभ हुआ। इस आर्ष–पद्धति के जन्मदाता स्वामी ब्रह्मनंद और आचार्य भगवानदेव थे। इनका यह विश्वास था कि देहरादून आदि के कन्या गुरूकुलों में महर्षि की सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित पाठविधि का पूरा अनुसरण नहीं होता है। कन्याओं को महर्षि द्वारा प्रतिपादित पाठविधि के अनुसार वेद–वेदागों का सम्पूर्ण ज्ञान कराया जाना चाहिए।[17]

1886 में आर्य समाज द्वारा जालंधर मे कन्या पाठशाला की स्थापना इस दिशा में अनोखा प्रयास था जो आगे चलकर कन्या महाविद्यालय के नाम से विख्यात हुआ। इसके स्थापना व संचालन में लाला देवराज जी और महात्मा मुंशीराम जी का योगदान तो था ही किन्तु उनके साथ कुछ महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जिसमें आचार्या सावित्री देवी, सुभद्राबाई आचार्या, कुमारी लज्जावती आदि प्रमुख थी। इसी को आधार बनाकर आर्य समाज ने भारत के अनेक स्थानों में आर्य कन्या पाठशालाये, आर्य कन्या महाविद्यालय, डी0ए0वी0 कन्या महाविद्यालय तथा डी0ए0वी0 गर्ल्स स्कूलों की श्रृंखला बनाई। इस महाविद्यालय का उद्देश्य भारतीय वैदिक संस्कृति के अनुरूप ब्रह्मचर्य पद्धति द्वारा बालिकाओं को शिक्षा देना है।[18]

कन्या गुरूकुल हाथरस महाविद्यालय (सासनी) हाथरस भारत का सर्वप्रथम कन्या गुरूकुल है जिसकी स्थापना पंडित गणपति के पुत्र श्री मुरलीधर भज्जूराम देवर हाल निवासी हाथरस द्वारा 6 अगस्त 1909 में हुई। प्रेरणास्रोत स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती रहे। गुरूकुल हेतु जमीन समाज के लोगों द्वारा क्रय की गई। 24 अगस्त सन् 1910 में इस गुरूकुल का अस्तित्व जगमगाने लगा। इस गुरूकुल का उद्देश्य कन्याओं को प्राचीन भारतीय वैदिक वातावरण में रखकर भारतीय संस्कृति के अनुरूप सीधा–सादा जीवन बिताते हुए, संस्कृत व्याकरण, हिन्दी, अंग्रेजी, वेद दर्शन, उपनिषद्, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, गृह विज्ञान, भारतीय संस्कृति, संगीत, व्यायाम मनोविज्ञान, कम्प्यूटर आदि की शिक्षा देकर योग्य नागरिक बनाना है, जो आगे चलकर आदर्श जीवन बिताते हुये देश, धर्म और समाज की सेवा में सहयोग दे सकें।[19]

कन्या गुरूकुल, देहरादून की स्थापना 1923 में आचार्य रामदेव ने की। ये स्त्री शिक्षा व उसके अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। महिलाओं के साथ भेदभाव व उनकी दयनीय स्थिति से अत्यन्त दुःखी थे। इन्होंने सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों के बोझ में दबी नारी को आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भरता स्वाबलम्बन बनाने के लिए नारी जाति की शिक्षा का समर्थन किया। वे वैदिक काल में प्राप्त महिला अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने अपने ही घर पर एक कन्या पाठशाला शुरू कर दी जो एक प्रकार की परीक्षणशाला थी। कई वर्षों तक विद्यावती जी ने इसकी अध्यक्षता की और आगे चलकर कन्या गुरूकुल की स्थापना का आधार निर्मित किया।[20]

इस कन्या गुरूकुल की पहली आचार्या कु0 विद्यावती सेठ बनी तथा पं0 विश्वम्भरनाथ पहले मुख्यधिष्ठाता बने। इसके बाद श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल और फिर 1953 में श्रीमती दमयन्ती कपूर इस पद पर नियुक्त हुई। आरम्भ में इस संस्था में विद्यालय का 8 वर्ष का तथा महाविद्यालय का तीन वर्ष का पाठ्यक्रम था। इसमें पंजाब प्रान्त के अतिरिक्त बर्मा, फिजी और अफ्रीका में बसे भारतीयों की बालिकायें भी शिक्षा ग्रहण करती थीं। आरम्भ में इस संस्था के पाठ्यक्रम का निर्धारण गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता था किन्तु आज गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को यू0जी0सी0 द्वारा मान्यता प्राप्त होने पर सारा पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के अनुसार 14 वर्षों का कर दिया गया है। जालंधर महाविद्यालय की भाँति इसकी

स्नातिकाओं ने अपनी मातृ संस्था की सेवा का व्रत का पालन करते हुये इसकी उन्नति में सहयोग दिया। इसमें लड़कियों को शिल्पकलाओं–सिलाई, बुनाई, क्रोशिया आदि की शिक्षा भी दी जाती थी। इसके साथ ही शिक्षणेतर कार्य–कलापों में संस्था ने नये कीर्तिमान स्थापित किये।[21]

कन्या गुरूकुल नरेला 15 सितम्बर, 1954 को प्रारंभ हुआ। इसकी स्थापना का श्रेय आर्य जगत् के दो सुप्रसिद्ध, बाल ब्रह्मचारी सन्यासियों को है। ये है – गुरूकुल कांगड़ी से सुप्रसिद्ध स्नातक तथा चित्तौड़ में महर्षि दयानंद के गुरूकुल की स्थापना के सपने को पूरा करने वाले श्री स्वामी व्रतानंद तथा नरेला ग्राम के निवासी, कर्मठ सन्यासी, भारतीय पुरातत्व लिपिशास्त्र एवं मुद्राशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान श्री स्वामी ओमानन्द। स्वामी व्रतानन्द जी को इसका कुलपति बनाया गया था। यह गुरूकुल कन्याओं को विशुद्ध आर्ष–पाठविधि से शिक्षा देने का एक प्रमुख निःशुल्क केन्द्र है। इस गुरूकुल में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठविधि के अनुसार कन्याओं को ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुए वेद – वेदागों की शिक्षा दी जाती है। इसका उद्देश्य छात्राओं को प्राचीन भारतीय संस्कृति के सभी प्रमुख अंगों का ज्ञान देकर विदुषी बनाना और शारीरिक शिक्षा देकर वीरांगना बनाना है। कम्प्यूटर जैसी आधुनिक शिक्षा के साथ चरित्र निर्माण, सात्विक जीवन, स्वस्थ शरीर और ब्रह्मचर्य के पालन पर इस गुरूकुल में बड़ा बल दिया जाता है।[22]

भारत के सामाजिक पुनर्जागरण के इतिहास में आर्य समाज एक ऐसा आन्दोलन है जिसने स्त्री शिक्षा को अपने कार्यक्रमों में प्राथमिकता दी इसके द्वारा स्त्रियों ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक दशा सुधारने का संकल्प लिया आर्य समाज के शिक्षा दर्शन की यही विशेषता है। दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित स्त्री शिक्षा की मान्यता को आर्य समाज द्वारा कन्या गुरूकुलों, महाविद्यालयों तथा कन्या विद्यालयों के माध्यम से क्रियान्वित किया गया है।

आर्य समाज के तत्वाधान में दो प्रमुख शिक्षा पद्धतियों का विकास हुआ दयानंद एंग्लो–वैदिक शिक्षा पद्धति तथा गुरूकुल शिक्षा पद्धति। आर्य समाज के द्वारा स्त्री शिक्षा की उन्नति में इस दोनों पद्धतियों का योगदान रहा है। आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा के लिए जिन विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का विकास किया है। उन्हें मुख्यतः दो वर्गों में बांटा जा सकता है, कन्या गुरूकुल और पुत्री पाठशालायें। डी0ए0वी0 संस्थाओं द्वारा स्थापित कन्या महाविद्यालय, कन्या हाईस्कूल, कन्या विद्यालय पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र बंगाल व उत्तर प्रदेश में प्रमुखतया हैं। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली की प्रमुख संस्थाये है – आर्य कन्या, गुरूकुल हरिद्वार, आर्य कन्या पाठशाला, नई दिल्ली, कन्या गुरूकुल हाथरस, कन्या महाविद्यालय, वाराणसी आदि।[23]

आर्य समाज ने भारत के अनेक स्थानों के आर्य कन्या पाठशालायें, आर्य कन्या महाविद्यालय, डी0ए0वी0 कन्या महाविद्यालय तथा डी0ए0वी0 गर्ल्स स्कूलों की श्रृंखला बनाई। दूसरी ओर कुछ आर्य सामाजियों द्वारा कन्या गुरूकुल स्थापित किये गये जो स्त्रियों के शिक्षा के आदर्श केन्द्र बन गये। यद्यपि 1947 में भारत विभाजन से आर्य समाज की अनेक शिक्षण संस्थायें पाकिस्तान में रह गयी और कुछ समय तक स्त्री शिक्षा की उन्नति अवरूद्ध रही तथापि शीघ्र ही आर्य समाज ने इस दिशा में पुनः प्रगति कर ली। वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रसार में सलंग्न इस संस्था के गुरूकुलों में भारतीय वैदिक संस्कृति के सिद्धान्तों के अनुरूप बालिकाओं को शिक्षा दी जा रही है। गुरूकुल आर्य शिक्षाओं तथा दयानंद जी के सन्देश को घर–घर पहुँचा कर महिलाओं की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है।

निष्कर्ष– आर्य समाज के कन्या विद्यालय और गुरूकुल स्वामी दयानंद की वैचारिक और सामाजिक परिकल्पना का साकार कर रहे हैं। इनका उद्देश्य तभी सार्थक होगा जब स्त्री बालक की प्रथम शिक्षका बनने से लेकर सामाजिक–आर्थिक क्षेत्र में भी कीर्तिमान स्थापित करे। आज के संक्रमण काल में नई समस्याऐं उत्पन्न हो रहीं हैं जिनका समाधान भारत की अध्यात्मिक–सांस्कृतिक विरासत से जुड़कर खोजा जाना चाहिए। नारी–शिक्षा इसका प्रमुख अवयव है।

तत्कालीन सामाजिक बुराईयों, व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने तथा नारी–शिक्षा पर बल देने का सफल प्रयास दयानंद सरस्वती के द्वारा किया गया। इनके विचारों का ही परिणाम रहा कि कन्या शिक्षा से सम्बन्धित अनेक पाठशालायें, गुरूकुल, विश्वविद्यालय अस्तित्व में आये।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना के साथ भारतीय समाज को बौद्धिक एवं आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित किया। इसी क्रम में उन्होंने स्त्री शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख एक आधार बताया। उनके बाद आर्य समाज ने महिलाओं की शिक्षा के लिए क्रांतिकारी कार्य किया। आर्य समाज द्वारा महिला विद्यालय और कन्या गुरूकुल शिक्षण संस्थाओं में महिलाओं के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास पर विशेष बल दिया गया। चरित्र निमार्ण तथा वैदिक साहित्य तथा दर्शन के शिक्षण के साथ–साथ पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा के अध्यापन का भी प्रबंध किया गया। गुरूकुल प्रणाली में अध्ययन को केवल साधन मानकर चरित्र निर्माण को प्रमुखता दी गयी। आश्रम जीवन पद्धति ने कन्या गुरूकुलों में कन्याओं को स्वावलम्बी बनाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति तथा वैदिक धर्म व दर्शन का अध्येता भी बनाया।

इस प्रकार आर्य समाज के महिला शिक्षा के प्रयासों ने एक विशिष्ट संस्कृति को स्थापित करने का प्रयास किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए0आर0 देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पापूलर प्रकाशन, छठा संस्करण, 2000 पृ0 258–59.
2. वही, पृ0 137.
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, 1988 पृ0 53.
4. आपदेव, मीमांसा न्याय प्रकाशः चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, व्याख्याकार डॉ0 राधेश्याम चर्तुर्वेदी, 2000 संस्करण, पृ0 42.
5. सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास, पृ0 31.
6. यजुर्वेद, 26 : 2.
7. सत्यार्थ प्रकाश, पूर्वोद्घृत पृ0 32.
8. वही, पृ0 80.
9. वही, पृ0 33 तथा किशोर, ब्रजनन्द (2004) – कन्या गौरव, श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट राजस्थान, द्वितीय संस्करण, पृ0 7.
10. किशोर, ब्रजनन्द, वही, पृ0सं0 7.
11. पब्लिशर्स नोट, (ओ0पी0 त्यागी, एम0पी0) सत्यार्थ प्रकाश, अंग्रेजी संस्करण, 1975, पृ0 2.
12. सत्यार्थ प्रकाश, (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), नई दिल्ली, 1975 पृ0 41.
13. ए0आर0 देसाई, पूर्वोद्घृत, पृ0 43.
14. वही, पृ0 272–273.
15. सत्यार्थ प्रकाश, पूर्वोद्घृत, पृ0 69–70.
16. सत्यदेव प्रीतम, सी0एस0के0 आर्य रत्न, (2017)– "अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन", महामन्त्री आर्य सभा मॉरिशस, 9.
17. किशोर आचार्य ब्र0 नन्द (2004) – कन्या गौरव, श्री घूडमल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट राजस्थान, द्वितीय संस्करण, पृ0 34.
18. मधु किश्वर, आर्य समाज कन्या महाविद्यालय, जालंधर, इकोनोमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली वॉल्यूम 21, न0 17, 26 अप्रैल 1986.
19. स्नातिका कमला (2011) – "शताब्दी स्मारिका" कन्या गुरूकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस, 1–6.
20. वैबसाइट ाहउकववदण्बवउए विद्यालय का परिचय।
21. किशोर आचार्य ब्र0 नन्द (2004), पूर्वोद्घृत, पृ0 50–52.
22. पूर्वोद्घृत, पृ0सं0 60 तथा दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 11 फरवरी 2018.
23. इन्दुबाला, वीमेन इशूज़ एन्ड आर्य समाज, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइन्स एन्ड रिसर्च, वाल्यूम 3, इशू 7, जुलाई 2014, पृ0 55.

*****